BABU BANARSI DAS

Babu Banarsi Das, popularly known as Babuji, was born on 8th July, 1912 in village Utarawli, District Bulandshahr in Uttar Pradesh.

He participated in the freedom struggle from a young age as a result of which he could not have much formal education. He had complete command over many languages such as Sanskrit, Urdu, Hindi and English. During the freedom struggle, he faced severe hardships due to his opposition to the British government. He was jailed several times but never gave up his struggle for India's independence. He actively participated in the Non-cooperation movement.

After independence of the country in 1947, he was elected unopposed to the State Legislative Assembly of Uttar Pradesh. Thereafter, he was elected to the State Assembly several times during which he headed various departments as minister, and became Speaker and Chief Minister of Uttar Pradesh. Babuji sowed the seeds of true economic self reliance and independence for the common farmer in the state by spearheading the cooperative movement and sustaining it to empower its people. As a result of his efforts, Cooperative Act was enacted in 1965. As a Cooperative Minister, he ensured constitution of various cooperative societies in the entire State of U.P. He initiated the idea of starting agro-processing units at a time when people were even unaware of it. He was also elected to the Rajya Sabha in the year 1972 and later represented Bulandshahar in Lok Sabha.

He strongly advocated female education. Due to his efforts, in Bulandshahar alone, more than 150 schools were opened. Babu Banarsi Das's enthusiasm for life and capacity for hard work manifested in his being a great organizational worker, a scholar of several languages and a visionary for his state and its people.

He left for heavenly abode on 03.08.1985.

Department of Posts is happy to release a Commemorative Postage Stamp on Babu Banarsi Das.

Credits :

Text	:	Based on the material furnished by the proponent.
Stamp/FDC	:	Anuj Kumar
Cancellation	:	Nenu Gupta

भारतीय डाक
India Post

तकनीकी आंकड़े
TECHNICAL DATA

जारी करने की तारीख	:	31 दिसम्बर, 2013
Date of Issue	:	31 December, 2013
मूल्यवर्ग	:	500 पैसा
Denomination	:	500 p
मुद्रित डाक–टिकटें	:	4.1 लाख*
Stamps Printed	:	0.41 Million*
मुद्रण प्रक्रिया	:	वेट ऑफसेट
Printing Process	:	Wet Offset
मुद्रक	:	भारत प्रतिभूति मुद्रणालय, नाशिक
Printer	:	India Security Press, Nashik

© डाक विभाग, भारत सरकार। डाक–टिकट, प्रथम दिवस आवरण तथा सूचना विवरणिका के संबंध में सर्वाधिकार विभाग के पास है।

© Department of Posts, Government of India. All rights with respect to the stamp, first day cover and information brochure rest with the Department.

*1 लाख प्रस्तावक हेतु
*0.1 Million for the proponent

मूल्य ₹ 5.00

भारतीय डाक
India Post

भारतीय डाक विभाग
DEPARTMENT OF POSTS
INDIA

बाबू बनारसीदास
Babu Banarsi Das

विवरणिका BROCHURE

बाबू बनारसीदास

बाबू बनारसीदास को बाबू जी के नाम से जाना जाता है। इनका जन्म 8 जुलाई, 1912 को उत्तर प्रदेश के जिला बुलन्दशहर के उतरावली गांव में हुआ था।

इन्होंने छोटी उम्र से ही स्वतंत्रता संघर्ष में भाग लिया जिसके परिणामस्वरूप ये अधिक औपचारिक शिक्षा प्राप्त नहीं कर पाए। परन्तु इन्हें कई भाषाओं जैसे कि संस्कृत, उर्दू, हिन्दी और अंग्रेजी का पूर्ण ज्ञान था। स्वतंत्रता संघर्ष के दौरान, ब्रिटिश सरकार से विरोध के परिणामस्वरूप इन्हें कई कठिनाइयों का सामना करना पड़ा। इन्हें कई बार जेल भेजा गया, परन्तु इन्होंने भारत की स्वतंत्रता के लिए संघर्ष का रास्ता न छोड़ा। इन्होंने असहयोग आंदोलन में भी सक्रिय रूप से भाग लिया।

वर्ष 1947 में देश की आजादी के बाद इन्हें उत्तर प्रदेश विधान सभा के लिए निर्विरोध चुना गया। इसके पश्चात, वे कई बार राज्य विधान सभा के लिए चुने गए तथा इस दौरान इन्होंने मंत्री के रूप में विभिन्न विभागों की अध्यक्षता की तथा उत्तर प्रदेश विधान सभा के अध्यक्ष तथा मुख्य मंत्री भी बने। बाबू जी ने सहकारिता आंदोलन का नेतृत्व कर तथा लोगों को अधिकार सम्पन्न बनाने के लिए इसे मजबूती प्रदान करके राज्य में आम किसान के लिए सही अर्थों में आर्थिक स्वावलंबन और स्वतंत्रता की शुरुआत की। इनके प्रयासों के परिणामस्वरूप, वर्ष 1965 में सहकारिता अधिनियम का अधिनियमन हुआ। सहकारिता मंत्री के रूप में इन्होंने संपूर्ण उत्तर प्रदेश में विभिन्न सहकारी समितियों का गठन सुनिश्चित किया। इन्होंने ऐसे समय में सस्य–प्रसंस्करण इकाइयों को लगाए जाने की योजना की शुरुआत की, जब लोगों को इसके बारे में जानकारी भी नहीं थी। वर्ष 1972 में वे राज्य सभा के लिए भी चुने गए। बाद में उन्होंने लोक सभा में बुलंदशहर प्रतिनिधित्व भी किया।

वे स्त्री शिक्षा के प्रबल समर्थक थे। इनके प्रयासों के परिणामस्वरूप, केवल बुलंदशहर में ही 150 से अधिक स्कूल खोले गए। जीवन के प्रति बाबू बनारसीदास का उत्साह और उनकी कर्मठता यह दर्शाती है कि वे संगठन के महान कार्यकर्ता तथा कई भाषाओं के ज्ञाता थे और अपने राज्य और उसके लोगों के लिए दूरगामी सोच रखते थे।

उनका स्वर्ग वास 03.08.1985 को हुआ।

डाक विभाग बाबू बनारसीदास पर स्मारक डाक टिकट जारी करते हुए प्रसन्नता का अनुभव करता है।

आभार :–

पाठ	:	प्रस्तावक से प्राप्त सामग्री के आधार पर
टिकट / प्रथम दिवस आवरण	:	अनुज कुमार
विरूपण	:	नीनू गुप्ता